अध्याय - 5

उपसंहार

उपसंहार

मूल कथ्य :

ऐतिहासिक या पौराणिक मिथकों को लेकर, उनको समसामयिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने के अनेक सफल या असफल प्रयास हिंदी नाट्य साहित्य में हुए है । डॉ. शंकर शेष ने भी ` नयी सभ्यता के नये नमूने,` ` एक और द्रोणाचार्य ` में प्राचीन और आधुनिक का संमिश्रण बनाया था । लेकिन ` खजुराहो का शिल्पी द्वारा उन्होंने ऐतिहासिक कथा के सहारे एक वैश्विक सत्य का उद्घाटन किया है । ` खजुराहो का शिल्पी ` का परिपार्श्व इस दृष्टि में अत्यंत विशाल बना है ।

` मोह का क्षण ` मानव पर सदियों से हावी रहा है । उसका अस्तित्व आज भी है और भविष्य में भी रहेगा । यह एक अपरिहार्य सत्य है । इस सत्य का उद्घाटन ` खजुराहो का शिल्पी ` का मूल कथ्य है । ` मोह का क्षण ` ही मानव को ऊर्ध्वमुख बनाता है और ` मोह के क्षण ` से ही मानव पतनोन्मुख बन जाता है । धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष - हिंदु धर्मानुसार मानव के चार पुरूषार्थ माने गये हैं । ` मोक्ष ` है जीवन की अंतिम आनंदमय स्थिति । अपने सभी कर्तव्यों और भोगों को पूर्ण करनेपर मनुष्य इस स्थिति को प्राप्त हो सकता है ।

लेकिन ` मोक्ष ` के पहले ` काम ` का विधान है । जीवन की सब सुंदरता का आस्वादन लेकर मानव परितृप्त हो जाता है, जीवन की सुख-दु:खान्वित स्थितियों से गुजरने के बाद, स्थितप्रज्ञ भाव से जीवन के अंतिम ध्येय की ओर उसका अग्रसर होना स्वाभाविक बात है । लेकिन कुछ व्यक्ति ` काम ` का दमन करके सीधे मोक्षकी तरफ जाना चाहते हैं । कुछ इने-गिने लोगों के बारे में यह अस्वाभाविक बात भी एक वरदान सिध्द होती है । अध्यात्म में ही पूर्णत्व पानेवाले ऐसे महात्मा समाज में बार-बार उत्पन्न नहीं हो सकते ।

संसार के अधिकांश लोग इंद्रियभोगों में ही जीवन बिता देते हैं। जो उससे बचकर भागने की कोशिश करते हैं, वे अवतारवाद में सोकर रह जाते हैं, लेकिन जीवन को क्षणभंगुर मानकर, कर्तव्य भावना से निहित कार्य करने वाले, ईश्वर के प्रति समर्पित व्यक्तित्व बिरले ही होते हैं।

मानव जाति को स्थूलरूपसे इन तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। मानवी जीवन की इन्हीं अवस्थाओं का चित्रण करने के लिए डॉ. शेषने खजुराहो मंदिर के रूपक को चुना है। मंदिर का बाह्य भाग आकर्षक मिथुन-मूर्तियों से सज्जित है, मध्य-भाग में पुरा कथाओं का चित्रण तो गर्भभाग में ईश्वर की मूर्ति प्रतिस्थापित है। मंदिर को देखनेवाले दर्शकों में से अधिकांश बाह्य भाग में ही रम जाते हैं, उनके लिए मंदिर के अन्य भाग कुछ महत्व नहीं रखते। कुछ लोग बाह्य भाग को महत्वहीन मानकर मध्यभाग तक पहुँच जाते हैं लेकिन आगे बढने की अपेक्षा अवतारवाद में उलझाकर रह जाते हैं, लेकिन कुछ बिरले लोग ही अन्य बातों को महत्वहीन मानकर गर्भ-भाग तक पहुँच जाते हैं। मानवी जीवन की ये स्थितियाँ केवल हमारे देश में ही नहीं, बल्कि सर्वदेशीय और सर्व-कालिक हैं। हमारे पूर्वजों को भी इन स्थितियों की पहचान थी और इसीलिए खजुराहो के मंदिरों की रचना हुई है।

लेकिन खजुराहो के मंदिरों के पीछे छिपी इस मूल विचारधारा को सभी लोग नहीं पहचान पाते। इन मंदिरशिल्पों के अनाकलनीय रहस्य को खोलने का कार्य कोइ संवेदनशील व्यक्ति ही कर पाता है। डॉ. शेष इस रहस्य को पहचानने में सफल हो गये हैं। नरनारायण राय के शब्दों में ` शंकर शेष का नाटक ` खजुराहो का शिल्पी ` मंदिर के स्थापत्य के दर्शन को नाटक के माध्यम से संप्रेषित करता है। जो खजुराहो का मन्दिर कहना चाहता है, वही बात नाटककार भी कहना चाहता है। अंतर यह है कि खजुराहो का मंदिर

स्थूल प्रस्तर खण्डों में ढाली गयी भंगिमाओं से अपनी बात कहता है, और नाटककार की बात जीवंत चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है ।`[1]

त्रासदी की कथावस्तु में संघर्ष तत्व की प्रधानता होती है । ` खजुराहो का शिल्पी ` की कथावस्तु भी संघर्ष तत्व से युक्त है । यहाँ संघर्ष का स्वरूप मानव विरूध्द उसकी प्रवृत्ति के रूप में चित्रित है । कई स्थानोंपर यह संघर्ष मानव विरूध्द मानव के रूप में भी दिखाया गया है । चंडवर्मा के कट-कारस्थान इसी संघर्ष का मूर्त रूप हैं ।

केवल घटना प्रधान नाटक निर्माण करना आसान है, लेकिन एकाध सूक्ष्म विचारधारा को स्थूल घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करना कठीन कार्य है । लेकिन डॉ. शेषने यह शिवधनुष्य लीलया उठाया है ।

मूल कथ्य को प्रस्थापित करने के लिए उन्होंने यशोवर्मन के मंदिर निर्माण का उचित ऐतिहासिक आधार खोज लिया है । यशोवर्मन की कथा के साथ कथ्य को पुष्टि देने के हेतु कथावस्तु में चंदेल वंश से संबंधित हेमवती की दंतकथा को भी कुशलतापूर्वक पिरोया गया है । मानवी जीवन की पतनोन्मुखता स्थिति को प्रत्यक्ष करने के लिए कल्पना का सहारा लेकर शिल्पी और अलका की कथा का निर्माण हुआ । मिथुन-मूर्तियों के निर्माण संबंधी बनी चिरंतन पहलेली को सुलझाने के लिए तर्क का सहारा लिया गया ।

इस तरह ` खजुराहो का शिल्पी ` की कथावस्तु में इतिहास, दंतकथा, कल्पना और तर्क का संम्मिश्रण योग्य अनुपात में हुआ है । अत: नाटक में गंभीर दर्शन को दर्शकों के उपर थोंपा गया है ऐसा नहीं लगता । डॉ. रीता कुमार के ये शब्द - ` वस्तुत: अपने कथ्य में यह एक प्रयोग है, ऐतिहासिकता भी यहाँ मात्र सबल है, शाश्वत मानवीय सत्य को प्रकट करनेवाला हैं दर्शन यहाँ आरोपित नहीं प्रतीत होता, यही इस नाटक की विशेषता है ।`[2] इसी बात को सिध्द करते हैं ।

प्रायोगिकता :

` नये और प्रयोगधर्मी नाटककारों में डॉ. शेष कथ्य और शिल्प की नवीनता के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखते है ।`[२] डॉ. शेष के अनेकानेक नाटकों को देखने पर डॉ. रीता कुमार द्वारा लिखे उपर्युक्त शब्दों का प्रत्यय मिलता है । डॉ. शेष के परवर्ती नाटकों के बारे में तो यह बात विशेषकर सत्य है । डॉ. शेषने ` फंदी,`` एक और द्रोणाचार्य,`` अरे मायावी सरोवर,`` रक्तबीज,`` पोस्टर,`` राक्षस,`` चेहरे` और ` कोमल गांधार ` आदि नाटकोंद्वारा प्रायोगिक नाटकोंकी एक समृध्द परंपरा निर्माण की । इस परंपरा का सूत्रपात ` खजुराहो का शिल्पी ` के निर्माण से हुआ है ।

आकाशवाणी के प्रसारण के हेतु निर्माण किया गया यह नाटक अपनी रचना पध्दति में डॉ. शेष के अन्य नाटकों से भिन्न रहा है । दो स्थानों पर चित्रित छ: दृश्यों में विभाजित इसकी रचना यही सिध्द करती है ।

मानवी जीवन के अपरिहार्य सत्य की कालातीत स्थिति का चित्रण करने के लिए खोजी गयी है - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि । यहाँ नाटक के पात्र मूल कथ्य को सादर करनेवाले प्रतीकों के रूप में उपस्थित हैं'।

गंभीर दर्शन युक्त कथावस्तु को प्रत्यक्ष मंचपर साकार करनेपर दर्शकों की क्या प्रतिक्रिया होगी, इसके बारेमें डॉ. शेष मन में संदिह रहा होगा. इसीलिए उन्होंने संवादों को प्राधान्य देकर ध्वनिद्वारा नाटक को प्रस्तुत करने का प्रयास किया अत: ` खजुराहो का शिल्पी ` एक रेडियो-नाटक के रूप में सामने आया । यह सत्य है, कि केवल घटनाप्रधान नाटक रेडियोपर सफल नहीं हो सकते, लेकिन सूक्ष्म विचारधारा से युक्त नाटक ध्वनि के आधार से श्रोताओं पर निरंतर प्रभाव निर्माण कर सकते है । अत: ` खजुराहो का शिल्पी ` का मूल

रूप रेडियो-नाटक का रहा । लेकिन रंगमंच से जुडे हुए नाटककार की यह कृति निर्मिति के समय अनायास ही मंचीय गुणों से युक्त बन गयी थी । श्री. उत्तमसिंह तोमर ने इसी बात को पहचानकर ` खजुराहो का शिल्पी ` को मंचपर भी सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया ।

रंगमंचपर सफल नाटकों का रेडियो रूपांतरण और प्रसारण सामान्य बात है, लेकिन मूल ध्वनिनाटक को रंगमंच देना और प्रेक्षकों के सामने सफलता-पूर्वक प्रस्तुत करनेका प्रयास कभी-कभार ही हुआ है । ऐसे नाटकों की मंचपर सफलता विवाद का विषय बन जाती है । लेकिन खजुराहो का शिल्पी इस बात के लिए एक सुखद अपवाद स्वरूप सिध्द हुआ है । डॉ. शेष का यह नाटक कथ्य के साथ रचना विधान में भी असाधारण रहा है । रेडियो और मंच दोनों की संभावनाएँ लेकर अवतरित हुआ यह नाटक सचमूच प्रायोगिक नाटकों मे शीर्ष स्थान रखता है ।

चरित्र निर्माण :

डॉ. शेष ने ` खजुराहो का शिल्पी ` पात्रों का निर्माण इतिहास और कल्पना के मिश्रण से बनाया है । केवल राजा यशोवर्मन ऐतिहासिक पात्र हैं, अन्य सभी पात्र नाटककार की प्रतिभा की उपज हैं ।

पात्रों के निर्माण में ` त्रासदी ` के तत्व के अनुसार नायक (प्रमुख पात्र) के चरित्र को प्राधान्य देकर उसके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओंको चित्रित किया गया है । यही पात्र अपनी नाटकीय कृतियोंद्वारा नाटककार के कथ्य को नाटक में प्रतिष्ठित करता है । कतिपय त्रुटियों के होते हुए भी इस नाटक के नायक शिल्पी मेघआनंद का चरित्र अपने निहित कार्य में सफल हुआ है ।

यशोवर्मन और अलका के चरित्र-चित्रण मानवीय भावनाओंका सुंदर अंकन हुआ है । अलका का पात्र अपनी शापित नियति पाठकों-प्रेक्षकों के मनपर

चिरकाल तक अपनी छाप छोडता है । अन्य पात्रों में माधव, पुष्पा तथा चंडवर्मा के लिए नाटकमें ज्यादा स्थान नहीं है, लेकिन ये पात्र भी स्वभावगत गुणावगुणों के साथ अवतरित हैं । गौण पात्रों में तांत्रिक और धर्मगुरू हैं, जिन्हें केवाड तर्क की स्थापना के हेतु निर्माण किया गया है ।

सभी पात्र मानवीय गुणावगुणों से युक्त हैं । इतिहास के साथ जुडे हुए होकर भी स्वाभाविक गुण-दोषों के कारण वे वर्तमान सेभी सीधा संबंध बनाते हैं । पात्रों के चरित्र-चित्रण में मनोविज्ञान का आधार लिया गया है । अत: पात्र केवल नाटककार के कथ्य को संप्रेषित करनेवाली कठपुतलियाँ नहीं, बल्कि हमारे जैसे रागयुक्त सजीव मनुष्य प्रतीत होते हैं ।

रेडियो-शिल्प और मंचीयता :

छ: दृश्यों और दो दृश्य-बन्धों में विभाजित इस नाटक का निर्माण रेडियो-नाटक के रूप में हुआ है । रंगमंच की मर्यादाओंका उल्लंघन कर दो स्थानों पर घटित होनेवाले दृश्य इसी बात की पुष्टि करते हैं ।

नाटक की भाषा को कथ्य को संप्रेषित करने के प्रबल साधन के रूप में बनाया गया है । संस्कृतप्रचुर और काव्यत्व पूर्ण भाषा इस नाटक का वैशिष्टय है । संस्कृत-प्रचूर भाषा का प्रयोग वातावरण निर्मितिमें पोषक सिध्द हुआ है । नाटक के संवाद सशक्त और अर्थवाही हैं ।

प्रकाश योजना, मंचसज्जा, वेशभूषा, ध्वनिप्रभाव, गीत संगीत आदि के संबंध में नाटककार ने अत्यंत आवश्यक जगहोंपर ही भाष्य किया है । इन बातों की जिम्मेदारी निर्देशक के कंधोंपर डालकर वे निश्चित हो गये हैं । प्रतिभावान निर्देशक के लिए यह छूट वरदान सिध्द हो सकती है ।

डॉ. शेष्ण की संक्षिप्त रंगसंकेतों की पध्दति मुराठी के नाटककार श्री. महेश एलकुंचवार से समानता रखती है ।

नाटक की प्रस्तुति के समय यथार्थवादी मंचपर चक्राकार मंच तकनीक की सहायतासे दो दृश्य-बन्धों का निर्माण सहजतया किया जा सकता है ।

नाटककार निर्देशक को पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्ष में थे, लेकिन इस नाटक की विशिष्ट रचना के कारण निर्देशक पर अनायास ही बंधन पड गए हैं । डॉ. नरनारायण राय के अनुसार ` वस्तु खण्ड पर निर्देशकीय प्रभाव डालकर नाटक के स्वरूप में विभिन्न प्रस्तुतियों के दौरान परिवर्तन लाया जा सकता है । इस पर भी यह सच प्रतीत होता है, कि निर्देशक कल्पना के उपयोग के लिए नाट्य-रचना में बहुत अधिक जगह नहीं रह गयी है और अधिकांश प्रस्तुतियों के दौरान नाटक नाटककार का ही अधिक रहेगा ।`[३]

नाटक की विशिष्ट शिल्प रचना के होते हुए भी उसके प्रतीक रंगमंचपर लेके जाने की संभावना जरूर बनी है । वहाँ दो दृश्य-बन्धों के लिए अलग सेटस् लगाने के झंझट नहीं होंगे, लेकिन उस प्रतीकात्मक मंच की सज्जा नेपथ्यकार के लिए कसौटी बन सकती हैं ।

दोष :

नाटक के साहित्यिक रूप में कुछ दोष जरूर निर्माण हुए हैं । नाटक के प्रमुख पात्र शिल्पी मेघराज आनंद के चरित्र निर्माण मे अतिरंजितता का सहारा लिया गया है । उसे निर्मोही और मृत्यु-भय रहित दिखाने के लिए निर्माण की हुई ` नारी और सर्प ` की बात समझदार पाठकों-दर्शकों को जरूर खटकती है ।

शिल्पी के चरित्र निर्माण में असंगति का दोष भी आया है । एक निर्मोही मनुष्य अपनी बनायी हुई एक पत्थर की मूर्ति के मोह में इतना क्यों बंध जाता है, कि उसकी स्थितप्रज्ञता कैंचुल की तरह हट जाती है, यह बात समझ में नहीं आती ।

संपूर्ण नाटक में शिल्पी को स्थितप्रज्ञ और विरागी सिध्द करने की चेष्टा की गयी है । लेकिन नाटक के अंत में पिर्यस्त घटना का चित्रण करके क्या बताना चाहा है, यह बात स्पष्ट नहीं होती । ऐसे अंत के कारण पाठक के मन में संभ्रम निर्माण होता है । यहाँ नाटकीयता का निर्माण तो हुआ है, लेकिन शिल्पी के चरित्र के बारे में संदेह भी उत्पन्न हुआ है । ऐसे अंत के कारण नाटक के उद्देश्य को लेकर विवादों का निर्माण हुआ है ।

इन थोडे दोषों के होते हुए भी ` खजुराहो का शिल्पी ` का महत्व कम नहीं होता । इस नाटक के रूप में डॉ. शेष ने हिन्दी नाट्य-संसार को एक अनमोल भेंट दी है । इस नाटक का कथ्य त्रिकालाबाधित सत्य की प्रतिष्ठापना करता है।। नाटक की कथावस्तु, पात्र और शिल्प अत्यंत सशक्त बने हैं । साहित्यिक और मंचीय दोनों मूल्यों की कसौटीपर यह नाटक सत्य सिध्द हुआ है । ` नाटक की व्याख्या की सम्भावनाएँ असीमित नहीं है ।....कतिपय सीमाओं के बावजूद काव्यत्व और दृश्यत्व के समन्वय का निर्वाह करने की जितनी सफल चेष्टा इस नाट्य रचना में हुई है, उतनी वर्ष (१९७२) की अन्य कृति में नहीं । `[४] नाटक की सफलता पर मुहर लग गयी है ।

संदर्भ

१) आधुनिक हिन्दी नाटक - एक यात्रा दशक - नरनारायण राय, पृ. १०४.

२) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में - डॉ. रीताकुमार, पृ. १०८.

३) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में - डॉ.रीताकुमार, पृ. १०२.

४) आधुनिक हिन्दी नाटक - एक यात्रा दशक - नरनारायण राय, पृ. १०४.

५) आधुनिक हिन्दी नाटक - एक यात्रा दशक - नरनारायण राय, पृ. १०४.